उपसंहार

उपसंहार

'जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन' के अध्ययन के उपरान्त समन्वित निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए है वे इस प्रकार हैं -

जयप्रकाश कर्दम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विश्लेषण के उपरान्त पता चलता है कि उनका व्यक्तित्व जिज्ञासु, कलाप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी, यथार्थ के हिमायती और समाज सुधार की भावना से ओत-प्रोत है। जयप्रकाश कर्दम स्वयं दलित होने के कारण उन्होंने दलित जीवन का अनुभव किया है। परिणामत: उनका साहित्य भी दलित जीवन से संबंधित घटनाओं का चित्रण करता है। कर्दम का साहित्य दलितों में प्रेरणा जगाने का कार्य करता है।

जयप्रकाश कर्दम का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के निकट इन्दरगढ़ी गाँव में हुआ। जयप्रकाश कर्दम को गरीबी का सामना बचपन से करना पड़ा। उनके परिवार के सभी सदस्यों के दिन मेहनत, मजदूरी करने में ही बीत गये। जयप्रकाश कर्दम के पिता 'हरिसिंह' जो दूसरों के खेतों में मजदूरी करते थे और अपनी गृहस्थी चलाते थे। लेकिन वे टि.बी.के मरीज होने के कारण बाद में वे काम न कर सके। जयप्रकाश कर्दम की माँ का नाम 'अतरकली' था, सब उन्हें 'अंतरों' के नाम से पुकारते थे। उनकी माँ मृदु स्वभाव की थी। जयप्रकाश कर्दम के पिता बीमार होने की वजह से उनकी माँ दूसरों के खेतों में काम करती थी। जयप्रकाश कर्दम जब ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ते थे, तब उनके पिताजी की मृत्यु हो गयी। पिताजी के मृत्यु के बाद घर की सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गयी। जयप्रकाश कर्दम के रणजितसिंह, संदिपकुमार और कुलदीप ये भाई है और सोनवती, मालती और मधुबाला ये तीन बहनें हैं।

जयप्रकाश कर्दम ने बहुत परिश्रम के साथ शिक्षा ली है। घर की सारी जिम्मेदारिओं को पूरा करते हुए उन्होंने पढ़ाई की है। इनकी प्राथमिक शिक्षा उनके गाँव

इन्दरगढ़ी में हुई। घर की परिस्थिति की वजह से वो बी.एस्सी. में प्रवेश न ले सके। उन्होंने बी.ए. की उपाधि दर्शनशास्त्र, हिंदी और अँग्रेंजी आदि विषयों में ले ली। एम.ए. की उपाधि भी उन्होंने प्राप्त की है। सन 2000 में 'मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ' से उन्होंने पीएच्.डी.की उपाधि प्राप्त की है।

जयप्रकाश कर्दम ने नौकरी की शुरूआत सन् 1980 में की। कुछ दिनों तक वे क्लर्क पद पर नौकरी करते थे। नायब तहसिलदार के पद उनकी नियुक्ती हुई थी जिसे उन्होंने नकारा। आज जयप्रकाश कर्दम भारतीय उच्च आयोग पोर्ट लुई (मॉरिशस) में द्वितीय सचिव (शिक्षा एवं संस्कृति) के पद पर कार्यरत है। जयप्रकाश कर्दम का विवाह सन् 1988 में ताराजी से बौद्ध पद्धति से हुआ। कम्पिला,विशाखा और आयु. कुणाल ये इनकी तीन संताने है।

जयप्रकाश कर्दम का व्यक्तित्व देखने के बाद पता चलता है कि उन पर डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर, गौतम बुद्ध, संत कबीर, संत रैदास और महात्मा फुले आदि महान पुरूषों के विचारों का प्रभाव है। कर्दम जीवन में शिक्षा, समता और स्वातंत्र्य को महत्वपूर्ण स्थान देते है। वे मानते है कि संघर्ष और आपदाएँ हमें मजबूती प्रदान करती है। अपने जीवन में वे अनुशासन को श्रेष्ठ मानते है। निष्ठा और ईमानदारी को वे जीवन में परमावश्यक मानते है। उनका साहित्य दलित वर्ग के प्रति संवेदना जताता है। वो समाज में समतावादी मानवता प्रस्थापित करने के पक्षधर है। समाज व्यवस्था में जो परंपरागत विचार है, उन विचारों के प्रति उनके मन में विद्रोह दिखाई देता है।

जयप्रकाश कर्दम के कृतित्व को देखने के पश्चात् पता चलता है कि वे दलितों में चेतना उत्पन्न करना चाहते है तथा दलित वर्ग को प्रगति के मुख्य प्रवाह से जोड़ना चाहते है। हिंदी दलित साहित्य में इनका योगदान सर्वश्रेष्ठ है। इनके साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत गौतम बुद्ध, संत कबीर, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर है और उनके विचारों से प्रेरित होकर ही इन्होंने साहित्य सृजन किया है।

'छप्पर' और 'करूणा' उपन्यासों द्वारा कर्दमने दलितों में जागृति लाने का प्रयास किया है तथा उनमें चेतना जगाने का कार्य किया है। दलितों के अनेक समास्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उपन्यास में कर्दम ने गौतम बुद्ध की विचारधारा को प्रवाहित किया है।उपन्यासों द्वारा जयप्रकाश कर्दम समाज में मानवतावादी मूल्यों का निर्माण करना चाहते है।

'गूंगा नहीं था मैं' और 'तिनका तिनका आग' कविता संग्रहों में जयप्रकाश कर्दम ने समाज में व्याप्त विषमता तथा जातिभेद का चित्रण किया है। इन काव्य-संग्रहों में दलित वर्ग को केंद्र में रखकर उनकी पीड़ा वेदना को अपने काव्य का विषय बनाया है एवं दलितों के समस्याओं का चित्रण किया है। इन कविता संग्रहों में दलितों के अस्मिता से जुड़े सवाल उभरते है। इन कविता-संग्रहों में जयप्रकाश कर्दम परिवर्तन के साथ समाज में बदलाव की अपेक्षा करते है।

जयप्रकाश कर्दम ने कहानी-संग्रह, बाल उपन्यास और बाल साहित्य भी लिखे हैं। इन्होंने आलोचनात्मक ग्रंथ भी लिखे हैं। जयप्रकाश कर्दम को बहुत सारे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं।

'दलित' शब्द का अर्थ जिसका दलन एवं शोषण हुआ है। जिन्हें भारतीय समाज व्यवस्था ने अस्पृश्य माना है, वे सभी दलित हैं। दलित वर्ग के अंतर्गत अस्पृश्य, हरिजन, डिस्प्रेस्ड् क्लासेस आदि आते है। समाज में दलित वर्ग का उच्चवर्णियों द्वारा शोषण किया जाता है। समाज में दलित आज भी अपने अधिकारों से वंचित दिखाई देते है। भारत में प्राचीनकाल से वर्ण-व्यवस्था पद्धति चली आ रही है। समाज में आज वर्ण-व्यवस्था के कारण स्थिति भयावह नजर आती है।समाज में शूद्रों के साथ आज भी घृणास्पद व्यवहार किया जाता है, इसी कारण उनका आज भी विकास नहीं हो पाया है। दलितों का आज भी शारीरिक शोषण होता है, महाजन, पूंजीपति, सेठ, मुंशी तथा भ्रष्ट अफसर इसमें प्रमुख है।

'दलित' शब्द के अर्थ के साथ इसकी व्यापकता तथा उसके आशय को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। 'दलित' शब्द समाज में हिंदू जाति-व्यवस्था एवं समुह का द्योतक है, जो समाज में अन्याय एवं अत्याचार दिखाता है। 'दलित' शब्द जातिभेद निर्मुलन की ओर न ले जाकर हिंदू समाज व्यवस्था को जाति व्यवस्था की ओर ले जाता है।

प्राचीन काल से ही समाज में दलित का स्थान निम्न एवं उपेक्षित रहा है। जातीयता तथा वर्ग विभाजन देश के एकात्मता के लिए एक अड़सर के रुप में दिखाई देता है। अगर समाज में एकता स्थापित करनी है, तो समानता की स्थापना होना बहुत जरूरी है। इसके लिए समाज से जातीयता को हटाना होगा। आज का दलित डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर के विचारों से प्रेरणा लेकर अन्याय के खिलाफ लड़कर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा हैं। वर्तमान का दलित संगठित होकर अन्याय के खिलाफ आवाज उठा रहा हैं।

प्राचीन काल के दलित की अपेक्षा वर्तमान काल का दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग दिखाई देता है। वर्तमान काल का दलित काफी मात्रा में परिवर्तित, विकसित बना है। सिर्फ कानून बनाने से लाभ नहीं होगा, प्रगति के लिए स्वयं दलितों को जगाने की आवश्यकता है। आज शिक्षा के कारण ही समाज में जातीयता तथा उच्च्व नीचता का प्रमाण कम हो रहा है। वर्तमान काल का दलित वर्ग राजनीति में एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में सामने आ रहा है।

डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने दलितों में शिक्षा का महत्त्व बताकर उने जगाने का कार्य किया है। उनमें चेतना तथा संघर्ष करने के लिए जाग्रत किया है। भारतीय समाज में शूद्रों को हीन माना जाता था, उन्हे कोई भी व्यवसाय करने का हक नहीं था। केवल उच्च्व वर्ग की गुलामी करना ही उनका काम माना जाता था।लेकिन डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने दलित समाज को जाग्रत किया, इनके परिस्थिति में सुधार करने का प्रयास किया।समाज व्यवस्था में जो वर्ण व्यवस्था थी, उसे ठुकराया।

सवर्ण लोगों द्वारा होनेवाले अत्याचार रोकने के लिए दलितो को राजनीतिक हकों के प्रति जाग्रत करने का काम डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने किया। डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने भारतीय संविधान के जरिए दलितों कों राजनीतिक हक दिए। दलित लोग राजनीतिक सत्ता के बिना अपना विकास नहीं कर सकते। इसलिए इन्होंने दलितों में राजनैतिक अधिकारों के प्रति सजग करने का कार्य किया।

धर्म के नाम पर ही दलितों का शोषण होता आया है। डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर दलितों के हीन स्थिति का प्रमुख कारण धर्म ही मानते है। दलित वर्ग को हिंदू धर्म में कोई स्थान नहीं है। धर्म के नाम पर ही उच्च वर्ग के लोग दलितों को गुलाम बनाते है। दलित वर्ग को समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए तथा मुलभूत अधिकारों को प्राप्त करने के लिए डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने धर्मांतर को आवश्यक माना है।

दलित लोगों को हमेशा शिक्षा से वंचित रखने की कोशिश की गयी है। उन्हें शिक्षा लेने का अधिकार नहीं था, इसी वजह से दलित वर्ग अपना विकास नहीं कर पाया। डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने दलितों को शिक्षा का महत्व बताते हुए उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित किया।

दलित कविताओं में दलितों का यथार्थ चित्रण मिलता है। हिंदी कविताओं में संत साहित्य से ही दलितों का चित्रण किया गया है।दलित वर्ग का यथार्थ चित्रण करने का कार्य संत कबीर, संत रैदास तथा हिराड़ोम से शुरू हुआ। दलित कविताओं में समाज में जो बंधन दलितों पर थे, उन्हें तोड़कर अपने विद्रोह को अभिव्यक्ति दी है। समाज में दलितों की समस्याओं को ध्यान में रखकर कविताएँ की गयी। हिंदी दलित कविताओं में दलितों के मन में चेतना जगाने का प्रयास किया है। तथा हिंदी दलित कविताओं में समाज परिवर्तन का स्वर दिखाई देता है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता संग्रह में दलित जीवन का यथार्थ वर्णन किया है। इनमें दलित वर्ग में जो अंधविश्वास, अज्ञान, शोषण, नारी की दयनीय स्थिति

आदि प्रवृत्तियों का अंकन किया है। दलित वर्ग समाज में परंपरागत ढंग से जीवनयापन कर रहा है। समाज में स्थित विविध समस्याओं से दलित वर्ग दुर्बलता तथा दरिद्रता से जी रहा है। समाज में दलित वर्ग का कोई महत्त्व नहीं है। वे केवल गुलाम है, उन्हें समाज में कोई स्थान नहीं है। प्राचीन काल से लेकर आज तक उनका शोषण उच्च वर्ग द्वारा हो रहा है। वे सवर्णों के अत्याचार का शिकार हमेशा से ही बनते आ रहे है।

सवर्ण लोग दलितों को मौलिक अधिकारों से आज भी वंचित रखा है। मनुष्य होते हुए भी उन्हें पशु से भी बदतर जीवन जीने के लिए मजबूर कर रहे है। समाज जीवन में विविध सामाजिक समस्याओं में दलितों पर अत्याचार होते हुए दिखाई देते है। समाज में दलित मजबुरी के कारण पारंपारिक व्यवसाय करते हुए दिखाई देते है। वर्ण व्यवस्था में शूद्र होने के कारण दलितों को उच्च वर्ग की गुलामी करनी पड़ती है। समाज में जो काम हीन माने जाते रहे है, उन्हें शूद्रों को करना पड़ता है। जयप्रकाश कर्दम अपनी कविताओं के माध्यम से जनसामान्य तक गौतम बुद्ध, महात्मा फुले तथा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर के विचार पहुँचाना चाहते है। कवि अपनी कविता से माध्यम से दलितों में चेतना जगाने के साथ उन्हें अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है।

भारतीय समाज को जातीयता एक कलंक है। जातीयता के कारण ही सवर्ण लोग दलितों का शोषण कर रहे हैं। जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं द्वारा जातीयता का दर्शन करवाया है। उनकी कविताओं में चित्रित दलित, शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ जाग्रत होकर संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। उनकी कविताओं में दलित अम्बेंड़कर जी के संदेश का पालन करते हुए संगठित बनता हुआ दिखाई देता है।

'समस्या' का अर्थ है संघटन, मिश्रण, मिलाने की प्रक्रिया, कठिन अवसर या प्रसंग। 'समस्या' इस छोटेसे शब्द ने पूरे मानव को बाँध दिया है। 'समस्या' शब्द को विवेचित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय समाज में दलित वर्ग अनेक समस्याओं

से जूझ रहा है। इन समस्याओं की वजह से दलितों का विकास नहीं हो रहा है। इनमें प्रमुखत: आर्थिक समस्या, जातीयता की समस्या, भूख की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अंधविश्वास की समस्या आदि समस्याएँ प्रमुख है। इनका विवेचन किया गया है।

समाज में आज जिनके पास पैंसे होते है, उन्हें समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है।जिसके पास पैंसे नहीं होते, उन्हें समाज में कोई किंमत नहीं होती। दलित वर्ग के पास आर्थिकता का कोई साधन न होने के कारण वो दरिद्रता का जीवन जी रहे है। दलितों में स्थित अशिक्षा, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, शोषण आदि समस्याओं के कारण दलित वर्ग के लोग आर्थिक दुर्बल नजर आते है।

जातीयता एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। सवर्ण लोग दलित लोगों का स्पर्श होना भी अपवित्र मानते है, उन्हें दुत्कारते है। इसी जातीयता के कारण दलित वर्ग पशु से भी बदतर जीवन जी रहा है। इस जातीयता का चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने अपने काव्यसंग्रहों में किया है।

जयप्रकाश कर्दम अपनी कविताओं के माध्यम से शोषण की समस्या पर प्रकाश डाला है। प्राचीन काल से ही दलितों का शोषण होता रहा है। उच्च वर्ग अपने हितों के लिए नीचले वर्गो का शोषण करता है, उन्हें उनके अधिकारों से दूर रखता है। उच्च वर्ग के लोग नये-नये हथकंड़े अजमाकर दलितों का शोषण करते दिखाई देते है। यौन शोषण की समस्या समाज में आज भी दिखाई देती है। दलित स्त्री को भरे बाजार में नंगा किया जाता है, उनके साथ बलात्कार किये जाते है। उच्चवर्ग द्वारा खुले आम दलित नारिओं का शोषण हो रहा है। दलितों का साहूकार द्वारा होनेवाला शोषण सदियों से चला आ रहा है। छोटे से कर्ज के बदले साहूकार उनकी जिंदगी अपने नाम करवा लेते है।

भ्रष्टाचार समस्या का चित्रण भी जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में मिलता है। भ्रष्टाचार की समस्या के कारण दलित वर्ग का शोषण होता हुआ दिखाई देता है। अगर कोई दलित आंदोलन करे तो उसे झूठे केस में फसाया जाता है। अगर कोई उच्च

वर्ग के लोग दलितों के ऊपर अन्याय करें, अगर उनके विरोध में किसी दलित ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की तो वो बाइज्जत बरी होते है।

अंधविश्वास की समस्या का चित्रण कवि ने किया है। अंधविश्वास की समस्या के कारण ही दलित वर्ग विकास नहीं कर पा रहा है। लोग उन्हें अंधविश्वास के जाल में ओढ़कर उनसें पैसे निकालते है और उन्हें आर्थिक स्तरपर दूर्बल बनाते है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविताओं में भूख की समस्या का चित्रण प्रमुखता से किया है। दलित जीवन में भूख की समस्या प्रमुख है। समाज में लोग भूख मिटाने के लिए कोई ना कोई काम करते है। समाज में दलित वर्ग के लोग उच्चवर्गो का काम करते हुए दिखाई देते है। लेकिन दलित वर्ग को उसका मुआवजा समय पर नहीं मिलता। इसी वजह से दलित लोग अपनी भूख की समस्या भी नहीं मिटा सकते।

आर्थिक समस्या का चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं में किया है। दलित वर्ग के पास आर्थिकता का कोई साधन न होने के कारण वे अपनी मूलभुत आवश्यकताओं को पूर्ति नहीं कर सकते। सामाजिक विषमता के कारण ही दलितों की आर्थिक स्थिति बिकट नजर आती है। आर्थिकता ही विकास की नींव है, लेकिन यही नींव दलितों की कमजोर है। अर्थ के अभाव में दलितों को दो वक्त की रोटी नहीं मिलती, शरीर ढँकने के लिए कपड़े भी नहीं मिलते।

जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में स्थित गैर जिम्मेदारी की समस्या का चित्रण किया है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए आज के युवक अपने माता-पिता को भूलकर अपनी नयी दुनिया बसा रहे है। कवि ने इस समस्या की ओर भी ध्यान दिया है।

नारी समस्याओं का चित्रण जयप्रकाश कर्दम अपनी कविता के माध्यम से करते है। आज समाज में नारी का शोषण हो रहा है। इसे अपने अधिकारों से वंचित रखा जाता है। सामाजिक स्तर पर भी नारी का शोषण होता है। दलित स्त्री को समाज में कोई महत्त्व नहीं हैं। इनके साथ भरे बाजार में सवर्णोंद्वारा अत्याचार होते है। उन्हें

अपने हवस का शिकार बनाया जाता है। इन्हें अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीने नहीं देते। समाज में नारी आज भी अनेक समस्याओं के साथ अपनी जिंदगी जी रही है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं में दलितों में स्थित पारंपारिक व्यवसाय की समस्या को उजागर किया है। समाज के शूद्र वर्ग हीन माननेवाले का करते आये है। सवर्णो के सेवा करना ही इनका काम माना जाता है। आज दलित अपनी मर्जी के खिलाफ पारंपारिक व्यवसाय मजबूरी में करता नजर आता है। आर्थिकता के कोई साधन न होने के कारण बहुत से दलित पारंपारिक व्यवसाय करते नजर आते है।

अपनी कविताओं में जयप्रकाश कर्दम ने बाढ़ की समस्या का चित्रण किया है। बाढ़ की समस्या एक प्राकृतिक समस्या है। इस समस्या का सामना करना मनुष्य के लिए कठिण होता है। बाढ़ का सबसे ज्यादा प्रभाव सामान्य मानव पर ही होता है। बाढ़ की वजह से कई गाँव उजड़ जाते है, कई लोग पशु-पक्षी भी इसमें बह जाते है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं में दलितों में स्थित अशिक्षा की समस्या का चित्रण किया है। मानव के विकास में शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। दलितों को प्राचीन काल से ही शिक्षा से वंचित रखा गया। इसी कारण से दलित वर्ग विकास से वंचित रहा है। दलित वर्ग अर्थ के अभाव में और समाज में स्थित जातीयता के कारण शिक्षा से दूर रहा। दलित समाज का अशिक्षा के कारण शोषण होता रहा है। आज दलित वर्ग के सामने अशिक्षा की समस्या एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रही है।

उपलब्धियाँ :

उपर्युक्त विषय का अध्ययन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है, वे इस तरह है -

1. जयप्रकाश कर्दम ने दलित जीवन का यथार्थ वर्णन करके दलितों में चेतना जगाने का प्रयास किया है।

2. जयप्रकाश कर्दम ने स्वानुभूति के आधार पर दलितों की पीड़ा एवं वेदना को अपने साहित्य में उजागर किया है।

3. जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविताओं के माध्यम से दलितों की समस्याओं को वाणी दी है।

4. जयप्रकाश कर्दम अपने साहित्य के माध्यम से समाज में वैचारिक क्रांति लाना चाहते है।

5. जयप्रकाश कर्दम ने अपने साहित्य के माध्यम से डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर के विचारों को पुर्न-स्तापित करने का काम किया है।

6. जयप्रकाश कर्दम की कविताएँ याने भारतीय समाज की वर्णव्यवस्था पर किया हुआ करारा व्यंग है, जो पाठकों को जगाने का काम करता है।

7. जयप्रकाश कर्दम की कविताएँ दलित जीवन की दयनीय स्थिति को उजागर करती है, जिससे पाठक सोचने के लिए विवश होते हैं।

8. जयप्रकाश कर्दम की कविताएँ भारतीय समाज में दलितों की स्थिति पर विचार करने के लिए पाठकों को प्रवृत्त करती है। यह उनके कविताओं की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

जयप्रकाश कर्दम के कविताओं पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

1. भारतीय दलित जीवन और जयप्रकाश कर्दम का काव्य।

2. जयप्रकाश कर्दम के काव्य में अम्बेड़करवादी विचारों का मूल्यांकन।

उपर्युक्त विषय के अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। यहाँ मेरे शोध-विषय की भी सीमा है। आशा है भविष्य में उपर्युक्त विषय पर शोधार्थी स्वतंत्र रूप से शोध कार्य संपन्न कर सकेंगे।